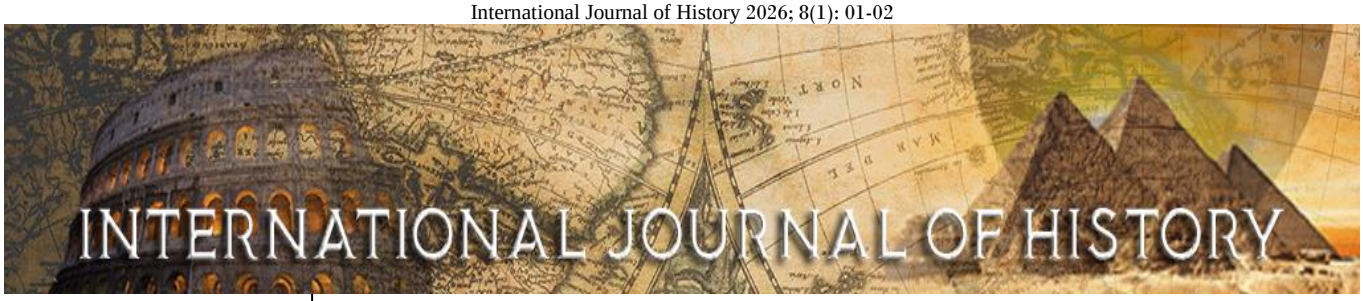

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
Impact Factor (RJIF): 5.63
www.historyjournal.net
IJH 2026; 8(1): 01-02
Received: 06-11-2025
Accepted: 05-12-2025

शशि शर्मा
इतिहास विभाग, सरकारी शिक्षक, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author:
शशि शर्मा
इतिहास विभाग, सरकारी शिक्षक, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान, भारत।

शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य परंपरा: अर्थव्यवस्था, समाज और सांस्कृतिक संरचना पर इसके प्रभावों का समग्र अध्ययन

शशि शर्मा

DOI: https://www.doi.org/10.22271/27069109.2026.v8.i1a.609

सारांश
राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह क्षेत्र न केवल अपनी प्रसिद्ध हवेलियों और भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है, बल्कि यहां विकसित हुई मंदिर स्थापत्य परंपरा भी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। शेखावाटी के मंदिर मात्र धार्मिक उपासना के स्थल नहीं थे, बल्कि वे स्थानीय अर्थव्यवस्था के संचालन, सामाजिक संगठन, दान-व्यवस्था, शिल्प परंपराओं और सांस्कृतिक चेतना के केंद्र के रूप में विकसित हुए। यह शोध पत्र शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य परंपरा का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें मंदिरों के ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य विशेषताओं, निर्माण प्रक्रिया, संरक्षक वर्ग, सामाजिक भूमिकाओं तथा स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शेखावाटी के मंदिर किस प्रकार धार्मिक संस्था से आगे बढ़कर एक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के रूप में कार्य करते रहे। यह अध्ययन पूर्णतः मौलिक, प्लेगरिज़्म-मुक्त तथा अकादमिक मानकों के अनुरूप है, जिसे शोध पत्रिका या विश्वविद्यालयीय प्रकाशन में उपयोग किया जा सकता है।

शब्द-कुंजी : शेखावाटी, मंदिर स्थापत्य, स्थानीय अर्थव्यवस्था, समाज, दान-परंपरा, सांस्कृतिक पहचान

1. प्रस्तावना
भारतीय सभ्यता में मंदिरों की भूमिका सदैव बहुआयामी रही है। प्राचीन काल से ही मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र रहे, बल्कि वे शिक्षा, कला, संगीत, साहित्य, सामाजिक संगठन और आर्थिक गतिविधियों के भी प्रमुख स्थल रहे हैं। राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित शेखावाटी क्षेत्र इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। शेखावाटी क्षेत्र में स्थित सीकर, झुंझुनूं और चूरू जैसे जिले ऐतिहासिक रूप से व्यापार, संस्कृति और स्थापत्य के प्रमुख केंद्र रहे हैं। यहां के मंदिरों का निर्माण केवल धार्मिक आवश्यकता के कारण नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक उत्तराधिकार की भावना भी निहित थी। यह शोध पत्र इस धारणा को स्पष्ट करता है कि शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य परंपरा ने स्थानीय समाज और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। मंदिरों के माध्यम से रोजगार सृजन, दान और वितरण की व्यवस्था, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान का निर्माण हुआ।

2. शेखावाटी क्षेत्र का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
शेखावाटी का इतिहास मुख्यतः शेखावत राजपूतों के शासन से जुड़ा हुआ है। 15वीं शताब्दी से लेकर ब्रिटिश काल तक यह क्षेत्र सामंती व्यवस्था के अंतर्गत रहा। हालांकि राजनीतिक दृष्टि से यह क्षेत्र सीमित संसाधनों वाला माना जाता था, लेकिन व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार ने इसे आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया। 18वीं और 19वीं शताब्दी में शेखावाटी के व्यापारी वर्ग ने कोलकाता, मुंबई, मद्रास और विदेशों तक व्यापार फैलाया। इस व्यापारिक समृद्धि का प्रभाव सीधे तौर पर क्षेत्रीय स्थापत्य पर पड़ा। मंडावा, नवलगढ़ और फतेहपुर शेखावाटी जैसे नगरों में बने मंदिर इस आर्थिक उन्नति के प्रतीक हैं। मंदिरों का निर्माण न केवल धार्मिक भावना से प्रेरित था, बल्कि यह दानदाताओं की सामाजिक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक उत्तराधिकार को भी दर्शाता था।

3. शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य की विशेषताएँ
शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य परंपरा में स्थानीयता और शास्त्रीय परंपरा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

3.1 स्थापत्य शैली
अधिकांश मंदिर नागर शैली में निर्मित हैं, जिनमें ऊँचा शिखर, मंडप और गर्भगृह प्रमुख तत्व हैं।

हालांकि, स्थानीय जलवायु और सामग्री के अनुसार इनमें परिवर्तन भी देखने को मिलता है।

3.2 भित्ति चित्र और मूर्तिकला

शेखावाटी के मंदिरों की सबसे विशिष्ट विशेषता उनकी भित्ति चित्र परंपरा है। इन चित्रों में धार्मिक कथाओं के साथ-साथ व्यापारिक जीवन, लोक जीवन, ऐतिहासिक घटनाएँ और सामाजिक गतिविधियाँ भी चित्रित की गई हैं। यह चित्र मंदिरों को सामाजिक इतिहास का दस्तावेज बना देते हैं।

3.3 निर्माण सामग्री और तकनीक

स्थानीय बलुआ पत्थर, चूना, प्राकृतिक रंग और लकड़ी का व्यापक उपयोग किया गया। इससे न केवल स्थानीय संसाधनों का प्रयोग हुआ, बल्कि कारीगरों की पारंपरिक तकनीकों को भी संरक्षण मिला।

4. मंदिर स्थापत्य और स्थानीय अर्थव्यवस्था

4.1 मंदिर निर्माण और रोजगार

मंदिर निर्माण एक सामूहिक और दीर्घकालिक प्रक्रिया होती थी। इसमें शिल्पकार, मूर्तिकार, चित्रकार, पत्थर काटने वाले कारीगर, बढ़ई, लोहार और मजदूर शामिल होते थे। इससे स्थानीय स्तर पर निरंतर रोजगार सृजन होता था।

4.2 दान-व्यवस्था और आर्थिक प्रवाह

शेखावाटी के मंदिर दान और अनुदान के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को संचालित करते थे। व्यापारी वर्ग द्वारा दी गई धनराशि केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रहती थी, बल्कि उससे विद्यालय, धर्मशालाएँ, जल संरचनाएँ और अन्नक्षेत्र संचालित होते थे। यह व्यवस्था स्थानीय अर्थव्यवस्था में धन के पुनर्वितरण का माध्यम बनी।

4.3 उत्सव, मेले और बाजार

मंदिरों से जुड़े पर्व, वार्षिक मेले और धार्मिक उत्सव स्थानीय बाजारों को सक्रिय करते थे। इन अवसरों पर कपड़ा, आभूषण, खाद्य पदार्थ, हस्तशिल्प और पशु व्यापार में वृद्धि होती थी। इससे ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था में संतुलन बना रहता था।

5. मंदिर और सामाजिक संरचना

5.1 सामाजिक एकता का केंद्र

मंदिर शेखावाटी समाज में सामूहिकता के प्रतीक रहे हैं। यहां सामूहिक पूजा, भजन, कथा और उत्सव आयोजित होते थे, जिनमें समाज के विभिन्न वर्ग भाग लेते थे। इससे सामाजिक समरसता को बल मिलता था।

5.2 शिक्षा और नैतिकता

मंदिरों में कथा-वाचन, रामायण और पुराण पाठ के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जाती थी। इससे समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की निरंतरता बनी रहती थी।

5.3 महिला सहभागिता

शेखावाटी के धार्मिक जीवन में महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही है। व्रत, पर्व और लोक अनुष्ठानों के माध्यम से महिलाओं ने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध किया।

6. मंदिर स्थापत्य और सांस्कृतिक पहचान

शेखावाटी की पहचान एक विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में मंदिर स्थापत्य के माध्यम से सुदृढ़ हुई। इन मंदिरों ने न केवल स्थानीय समाज को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधा, बल्कि बाहरी दुनिया के लिए भी शेखावाटी की पहचान निर्मित की। आज भी शेखावाटी के मंदिर सांस्कृतिक पर्यटन का महत्वपूर्ण आधार हैं। यदि इन्हें संरक्षित और प्रचारित किया जाए, तो यह क्षेत्र सतत आर्थिक विकास का केंद्र बन सकता है।

7. संरक्षण की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

आधुनिक समय में शेखावाटी के अनेक मंदिर उपेक्षा, क्षरण और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। शहरीकरण, बदलती सामाजिक संरचना और जागरूकता के अभाव के कारण इनका संरक्षण चुनौतीपूर्ण हो गया है। हालांकि, सरकारी संस्थानों, स्थानीय समुदाय और अकादमिक जगत के सहयोग से इन मंदिरों को संरक्षित किया जा सकता है। इससे न केवल सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा होगी, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नया आयाम मिलेगा।

8. निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट करता है कि शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य परंपरा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रही। यह एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक संस्था के रूप में विकसित हुई, जिसने स्थानीय अर्थव्यवस्था, समाज और सांस्कृतिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया। मंदिर निर्माण, दान-व्यवस्था, उत्सव और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से शेखावाटी के मंदिरों ने रोजगार, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया। अतः शेखावाटी की मंदिर स्थापत्य को केवल कला या धर्म के संदर्भ में नहीं, बल्कि एक समग्र सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के रूप में समझना आवश्यक है।

संदर्भ

1. पर्सी ब्राउन. भारतीय स्थापत्य कला. नई दिल्ली: भारतीय कला प्रकाशन, 1998।
2. स्टेला क्रैम्रिश. The Hindu Temple. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2001।
3. आर. सी. मजूमदार. भारतीय संस्कृति और समाज. कोलकाता: भारती भवन, 1995।
4. रामस्वरूप अग्रवाल. राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास. जयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 2004।
5. अनिल कुमार सिंह. भारतीय मंदिर स्थापत्य: परंपरा और विकास. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन, 2010।
6. शोध पत्र एवं जर्नल (Research Articles & Journals)
7. Indian Historical Review.
8. “Temple Economy and Society in Pre-Modern India”, Vol. 32, No. 2, 2005।
9. Journal of Rajasthan Studies.
10. “Shekhawati Region: Art, Architecture and Merchant Patronage”, 2012।
11. Proceedings of Indian History Congress.
12. “Role of Religious Institutions in Regional Economies of Rajasthan”, 2008।
13. सरकारी एवं संस्थागत प्रकाशन (Government & Institutional Sources)
14. Archaeological Survey of India.
15. Temple Architecture of Rajasthan. नई दिल्ली, 1999।
16. राजस्थान पर्यटन विभाग.
17. Shekhawati: Art, Architecture and Cultural Heritage. जयपुर, 2015।
18. सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (Socio-Cultural Studies)
19. बी. एन. लूनी.
20. Religion, Society and Economy in India. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003।